पाठ-7

E3HZ5H

भारत में नवजागरण

धार्मिक एवं सामाजिक सुधार

अंग्रेजी राज का जो प्रभाव भारतीय समाज पर हुआ वह पूर्व के सभी विदेशी आक्रमणों के प्रभावों से भिन्न था। इस समय भारत का एक ऐसे आक्रमणकारी से सामना हुआ जो न केवल रंग में श्वेत था अपितु जो अपने आपको सामाजिक तथा सांस्कृतिक रूप से अधिक उत्तम समझता था।

18 वीं शताब्दी में यूरोप में एक नवीन बौद्धिक लहर चल रही थी। नवीन चिन्तन, तर्कवाद, अन्वेषण की भावना, विज्ञान तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने यूरोप के राजनैतिक, सैनिक, आर्थिक तथा धार्मिक सभी पक्षों को प्रभावित किया। अब यूरोप सभ्यता का अग्रणीय

महाद्वीप बन गया था। इसके विपरीत भारत को एक गतिहीन, निष्प्राण, गरीब तथा गिरते हुए समाज के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा था।

कुछ अधिक परिपक्व व्यक्ति जिनमें राजाराम मोहन राय एवं सर सैय्यद अहमद खाँ प्रमुख थे, वे पश्चिमी शिक्षा एवं विचारों से प्रभावित हुए। इनका विचार था कि धर्म व समाज में सुधार होना चाहिए। हमें पूर्व तथा पश्चिम के उत्तम विचारों को स्वीकार कर लेना चाहिए।

तीसरा एक वर्ग और भी था जो पाश्चात्य संस्कृति की श्रेष्ठता को स्वीकार करने के पक्ष में नहीं था। वह भारत की प्राचीन परम्परा से आधुनिक राष्ट्रवाद के सन्दर्भ में प्रेरणा लेना चाहता था। इनकी मान्यता थी कि यूरोप को भारतीय अध्यात्मवाद से बहुत कुछ सीखना है। इसमें आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन व देवबन्द आन्दोलन प्रमुख थे।

अंग्रेजी शिक्षा, पाश्चात्य विचार, तर्कवाद, विज्ञानवाद तथा मानवतावाद से प्रभावित होकर भारतीयों ने अपने-अपने धर्म को सुधारने का प्रयत्न किया। धर्म को तर्क से मापा जाने लगा और धर्म में जो विसंगतियाँ थीं उन्हें छोड़ा जाने लगा। सामाजिक कुरीतियों के प्रति सामाजिक सोच में बदलाव आया। अन्ध विश्वास, कर्मकाण्ड इत्यादि को तर्क के तराजू पर तौलकर धर्म में सुधार किया गया।

धार्मिक सुधार आन्दोलन

इन सभी के फलस्वरूप भारतीय समाज में कुछ धार्मिक व सामाजिक सुधार आन्दोलन प्रारम्भ हुए। इस आन्दोलन ने भारतीय समाज का न केवल रूप ही बदल दिया अपितु भारत के आधुनिकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारत में लगभग सभी सामाजिक कुरीतियाँ धार्मिक मान्यताओं पर आधारित थीं। इसीलिए धर्म को सुधारे बिना समाज-सुधार सम्भव नहीं था। भारतीय जीवन के विभिन्न पक्षों में इनका बहुत निकट का सम्बंध था। जैसे सती, विधवाओं को पुनर्विवाह पर निषेध तथा देवदासी प्रथा जैसी धार्मिक मान्यता समाप्त हुए बिना उनका सामाजिक कल्याण सम्भव नहीं हुआ। आइए कुछ समाज सुधारकों के योगदान को जानें-

महिलाओं के लिए नये कानून

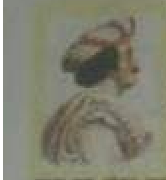
राजा राम मोहन राय

राजा राम मोहन राय (१७७२–१८३३) ने वर्ष १८२८ में ब्रह्मसमाज की स्थापना की। इन्होंने समाज–सुधार के अनेक कार्य किए। बाल विवाह, बहुपत्नी प्रथा, जाति व्यवस्था, सती प्रथा का विरोध किया। विधवा पुनर्विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, महिलाओं के अधिकार, महिलाओं की शिक्षा के पक्षधर थे। मूर्तिपूजा तथा धर्म के कर्मकाण्डों में इनका विश्वास नहीं था। कठोर जाति व्यवस्था तथा अस्पृश्यता के विरोधी थे। वेद तथा उपनिषदों का स्थानीय बोलियों में अनुवाद किया। अंग्रेजी विद्यालयों, हिन्दू कालेज, वेदान्त कालेज की स्थापना की।

पंडित तर्कालंकार और राम मोहन राय के बीच सती प्रथा को लेकर बहस हुई। तर्कालंकार सती प्रथा के पक्ष में थे जबकि राम मोहन राय सती प्रथा खत्म करना चाहते थे।

तर्कालंकार ने कहा : "ऋषि अंगिरा ने कहा है कि जो औरत स्वर्ग की कामना करती है उसे पति की चिता में जल कर मर जाना चाहिए।"

राम मोहन : "पर, मनु और याज्ञवल्क्य ने कहा है कि पति की मृत्यु के बाद औरत को सादगी से जीवन बिताना चाहिए। उन्होंने विधवा औरत को सती होने के लिए नहीं कहा।"

पंडित तर्कालंकार : "यह बात तो किसी शास्त्र में नहीं लिखी पर हमारे देश में ऐसा करना एक बहुत पुरानी परम्परा है। इसलिए सती तो होनी ही चाहिए।"

राम मोहन : "सती हमारे देश में हर समय व हर जगह नहीं होती आई है। फिर भी, यह मान लें कि चोरी व हत्या भी तो पुराने समय से हो रही है। क्या आप इन्हें भी सही मानेंगे? पुरानी होने के बावजूद हम चोरी व हत्या जैसे अपराधों का विरोध करते हैं। वैसे ही सती प्रथा भी हत्या है– एक अमानवीय अपराध है अतः इसे बंद करना चाहिए।"

राम मोहन राय की कोशिशों के कारण लार्ड बैंटिंक ने १८२९ में सती प्रथा रोकने का कानून बनाया। १८५६ में यह कानून बना कि विधवा स्त्रियों की दुबारा शादी की जा सकती है। नवजात कन्या को मार देना भी गैर कानूनी बनाया गया। ये सभी कानून आज भी लागू हैं।

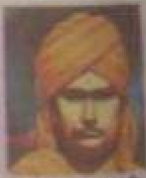
दयानन्द सरस्वती

दयानन्द सरस्वती नामक संन्यासी ने आर्यों की वैदिक संस्कृति को अपनाने पर जोर दिया और सन् १८७५ में आर्य समाज की स्थापना की। उन्होंने वेदों को ज्ञान का खजाना बताया तथा मूर्तिपूजा, जाति प्रथा, ब्राह्मण वर्चस्व का विरोध किया। वे एक ईश्वर के पक्षधर थे। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की रचना की। आर्य समाज द्वारा शिक्षा के प्रसार हेतु विद्यालय खोले गये। गुरुकुल पद्धति को बनाए रखने के लिए हरिद्वार में लड़कों और लड़कियों के लिए गुरुकुल कांगड़ी खोला।

महादेव रानाडे

महादेव गोविन्द रानाडे ने इसी प्रकार प्रार्थना समाज की स्थापना की। उन्होंने श्रमिकों के लिए शैक्षिक संस्थाएँ खोलीं।

रामकृष्ण परमहंस (१८३६–१८८६) का भी योगदान महत्वपूर्ण था। वे भी एक ईश्वर की उपासना में विश्वास करते थे तथा पश्चिमी संस्कृति की अपेक्षा भारतीय संस्कृति को उत्तम बताते थे।

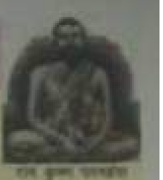
राम कृष्ण परमहंस

स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द (१८६३–१९०२) रामकृष्ण परमहंस के शिष्य थे। इन्होंने सन् १८९७ में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। सन् १८९३ में शिकागो में विश्व धार्मिक सभा में हिन्दुत्व की बात रखी। वह भारतीय समाज में पश्चिमी प्रभाव के विरोधी थे। वे गर्व से कहते थे कि "मैं भारतीय हूँ तथा प्रत्येक भारतीय मेरा भाई है।" वे अंधविश्वास तथा अस्पृश्यता के विरोधी थे। उन्होंने मानवता, समानता तथा स्वतंत्रता की शिक्षा दी। इन्होंने ज्ञान भक्ति, योग और कर्म पर विशेष बल दिया। उन्होंने वैज्ञानिक सोच को महत्व दिया।

मुस्लिम सुधार आन्दोलन

सर सैय्यद अहमद खाँ

सर सैय्यद अहमद खाँ (१८१७–१८९८) ने १८६४ में साइंटिफिक सोसायटी (विज्ञान समिति) की स्थापना की। वे पश्चिमी शिक्षा के पक्ष में थे। इन्होंने मुसलमानों के लिए अंग्रेजी शिक्षा की वकालत की और पश्चिमी विज्ञान पढ़ने तथा आधुनिक विचारों को अपनाने की बात कही। वे मुसलमानों में पर्दा प्रथा, बहु विवाह, आसान तलाक व्यवस्था के विरुद्ध थे। इन्होंने मुसलमानों के लिए अलीगढ़ में ऐंग्लो ओरियण्टल विद्यालय खोला। यही बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुआ।

दादाभाई नौरोजी

पारसी सुधार आन्दोलन

दादाभाई नौरोजी ने पारसियों में सामाजिक बुराइयों तथा धार्मिक अंधविश्वासों को दूर किया। उन्होंने पारसी समुदाय को आधुनिक भारतीय समाज के अनुरूप बनाने का प्रयास किया था।

दलित जातियों के सुधार आन्दोलन

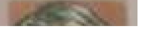

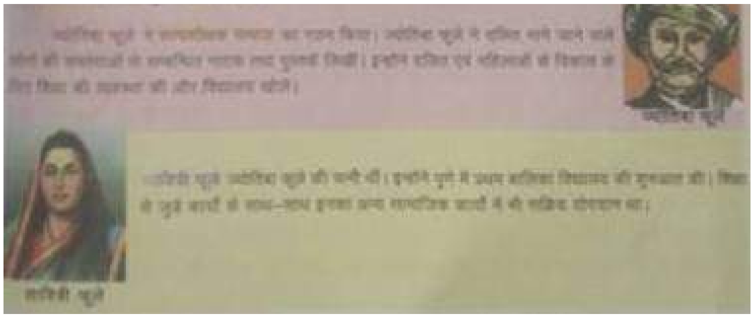

शब्दावली

नव जागरण - धर्म तथा समाज से संबंधित पुरानी परम्पराओं एवं मान्यताओं में परिवर्तन लाने के लिए प्रयास।

अभ्यास

1. बहुविकल्पीय प्रश्न

(1) ब्रहम समाज की स्थापना की-

(क) स्वामी विवेकानंद ने (ख) राजा राम मोहन राय ने

(ग) दयानंद सरस्वती ने (घ) महादेव गोविंद रानाडे ने

(2) लार्ड बैंटिक ने सती प्रथा रोकने का कानून बनाया-

(क) 1829 ई0 में (ख) 1856 ई0 में

(ग) 1817 ई0 में (घ) 1818 ई0 में

2. अतिलघु उŸारीय प्रश्न

(क) दयानंद सरस्वती ने किस संस्कृति को अपनाने पर जोर दिया ?

(ख) ज्योतिबा फूले ने किस समाज का गठन किया ?

3. लघु उŸारीय प्रश्न

(क) स्वामी विवेकानंद के बारे में लिखिए ?

(ख) सावित्री फूले कौन थी ? इनके कार्यों पर प्रकाश डालिए।

(ग) नवजागरण से क्या तात्पर्य है ?

4. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(क) धार्मिक आंदोलनों के नाम लिखिए। उनसे संबंधित व्यक्तियों के योगदान पर प्रकाश डालिए।

प्रोजेक्ट वर्क

1. अपने क्षेत्र के धर्म एवं समाज सुधारकों के नाम तथा उनके द्वारा किये जा रहे सुधारों को पता करके लिखिए।